RNI No. : DELBIL/2005/15122 D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21

विद्याभारती संकुल संवाद

मासिक पत्रिका
E-mail : vbsankulsamvad@gmail.com

वर्ष-15 अंक 3 फरवरी 2019 विक्रमी सं. 2075 मूल्य : एक रुपया

परीक्षा पर देश के प्रधानमंत्री की चर्चा का मंतव्य

परीक्षाएँ विशेष रूप से बोर्ड की फाइनल परीक्षाएँ आते ही देश में एक ऐसा माहौल बनने लगता है जो बच्चों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव अवश्य डालता है। हर तरफ चाहे वह विद्यालय हो, घर या अन्य जगह, सभी जगह कुछ ऐसा ही दिखाई व सुनाई देता है। घरों में माता-पिता की अपने पाल्यों के प्रति चिंता, प्रोत्साहन, समझाना- बुझाना एवं डांट-फटकार का अनुभव तो हम सबने किया ही होगा। यद्यपि सकारात्मक पक्ष पर विचार करें तो इस दौरान इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया भी पर्याप्त सक्रिय दिखाई देता है। समाचार पत्रों में तो प्रतिदिन किसी ना किसी विषय के मॉडल प्रश्न-पत्र तथा उन्हें हल करने की सावधानी और अधिक अंक प्राप्त करने के टिप्स छपते रहते हैं। सुबह-शाम टीवी या रेडियो के किसी ना किसी कार्यक्रम में भी परीक्षार्थियों के लिए ऐसे संदेश प्रसारित होते रहते हैं जो अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहते। पर सोचिए कि ये सबकुछ परीक्षाओं के समय ही क्यों? ऐसी सावधानियाँ पहले से रखी जाएँ तो कुछ और ही परिणाम हो सकेगा, ऐसा विचार हम सब क्यों नहीं करते? सेना के क्षेत्र का वह उदाहरण तो हमें याद है ना जिस देश की सेना शांति के समय अधिकतम पसीना बहाती है उस देश के सैनिकों को युद्ध के समय कम से कम खून बहाना पड़ता है, विद्यार्थी पंच लक्षणम का संदेश भी यही है –

काक चेष्टा बकोध्यानम, स्वान निद्रा तथैव च!
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्!!

स्वाभाविक है नियमित, व्यवस्थित, पक्के इरादे और प्रतिबद्धता के साथ कोई भी काम हम करें तो सुपरिणाम मिलना ही है। अभी पिछली 29 जनवरी को देश के प्रधानमंत्री ने भी इस दिशा में देश भर के चुनिंदा बच्चों के साथ एक सामूहिक एकत्रीकरण में ऐसे ही कुछ संदेशयुक्त चर्चा करके सकारात्मक पहल की है। यद्यपि यह उनके प्रधानमंत्री कार्यकाल का दूसरा कार्यक्रम है। दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में देश भर के लगभग 2000 विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों के साथ बड़े आनंदपूर्वक एवं भव्य वातावरण में उनकी चर्चात्मक वार्ता एक सकारात्मक संदेश दे गई। इस चर्चा के सभी बिंदुओं का वर्णन नीचे करते हुए पाठकों से ये आग्रह अवश्य है कि इसका उपयोग उसी भाव से सीखने व सिखाने के क्षेत्र में किया जाए, जो मान. प्रधानमंत्री जी ने किया है। एक बात और इस चर्चा में रहा कि भारत के अतिरिक्त नेपाल, रूस, नाइजीरिया तथा कुवैत जैसे देश के बच्चे भी प्रश्नोत्तर में भाग लिए।

मंत्रस्वरूप वे विशेष बिंदु जो आपके पाल्यों का जीवन संवारेंगे –

1. बच्चों को समय प्रबंधन (Time Management) सिखाएँ। जीवन में उसका सुखद परिणाम बताएँ।
2. बच्चों की पढ़ाई में रुचि बढ़े, इसके लिए उन्हें प्रैक्टिकल लर्निंग (Practical Learning) सिखाएँ।
3. इससे रुचि एवं व्यावहारिक ज्ञान दोनों बढ़ता है।
4. बच्चों को उसी तरफ जानें दें जिधर उनकी रुचि हो।
5. प्रत्येक बच्चे में अनेक क्षमताएँ एवं शक्तियाँ भरी-परी हैं, बस उसके सकारात्मक पहलू को स्वयं समझने व उसकी सराहना कर प्रोत्साहन करने की आवश्यकता है।
6. बच्चे के हर छोटे-छोटे सुधार पर भी उसकी प्रशंसा करें।
7. अध्यापक और अभिभावक दोनों बच्चों के आस-पास के वातावरण से उन्हें सीखने का अवसर दें।
8. हमारे सामने कोई चुनौती नहीं होगा तो हम लापरवाह बन जाएंगे, अत: हर चुनौती जीवन में एक अवसर लाती है। इस तथ्य को अपने बच्चों को बताएँ।

परिजन एवं शिक्षक ये कार्य बिल्कुल न करें –

1. बच्चों की तुलना नकारात्मक ढंग से दूसरों से करेंगे तो उससे बच्चे निराश होंगे।
2. यदि आपका बच्चा 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है तो उसका प्रोत्साहन करने से वह 70 से 80 प्रतिशत अंक ला सकेगा, लेकिन सीधे 92 या 95 प्रतिशत से तुलना करके हर समय उसे डाँटते-फटकारते रहेंगे तो वह हतोत्साहित होगा तथा वह 40 प्रतिशत के स्तर पर पहुँच जाएगा, इसलिए इससे बचें।

3. बच्चों का रिपोर्ट कार्ड अपने विजिटिंग कार्ड के तौर पर ना पेश करें। ऐसा करने से उस पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। यह अनुचित और अस्वस्थ तरीका है।
4. बच्चे पर उतना ही दबाव बनाएँ जितना उसकी क्षमता हो, अन्यथा नित्य प्रति होने वाली दुर्धटनाओं से आपको ही रू ब रू होना पड़ेगा।
5. बच्चों पर अपने सपने का बोझ ना डालें, आखिर उसकी अपनी भी तो कोई आकांक्षा होगी।

प्रधानमंत्री के वे संदेश जिनका विचार बच्चों को स्वयं करना है -

1. चाहे परीक्षा के दिन हों या सामान्य, सदैव हल्का महसूस करें। दबाव में ना आएँ।
2. हमारी पढ़ाई केवल परीक्षा के लिए नहीं है, जीवन के प्रत्येक आयाम और चुनौतियों का सामना करने में भी हम सक्षम बनें।
3. सिर्फ रैंक लाने पर फोकस करने के स्थान पर नई चीजों को समझने पर भी बल दें।
4. अपने पुराने रिकार्ड से अपनी तुलना करें। अपना प्रतिस्पर्धी स्वयं बनें, ऐसा करने से कभी असफल नहीं होंगे।
5. खुद से पूछिए कि क्या यह दसवीं या बारहवीं की परीक्षा आपके जीवन की परीक्षा है? या केवल पड़ाव है।
6. जीवन के लक्ष्य सदैव ऊँचे रखिए लेकिन इसे पाने के लिए बोझ मत मानिए।

प्रधानमंत्री से बात करके बच्चों ने क्या कहा ?

1. नवोदय विद्यालय आंबेडकर नगर की बारहवीं कक्षा की छात्रा गरिमा ने कहा " लक्ष्य निर्धारण को लेकर पी.एम. की कही बात मेरे मन को छू गई" उसका ये भी कहना था कि बड़े लक्ष्य का निर्धारण कर हमें निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिए।
2. नौवीं की छात्रा श्रुति वर्मा अपने साथ मोबाइल लाई थी और अपने अन्य दोस्तों के साथ पी.एम. की प्रमुख बातों को टाईप कर नोट्स बनाया। वह इस बात को अपने पैरेंट्स और टीचर्स से साझा करेगी।
3. सुल्तानपुर से आए बी.एस.सी. तृतीय वर्ष का छात्र सत्यपाल ने बताया "पी.एम. से सवाल पूछने का मौका तो नहीं मिला पर अनेक छात्रों ने जो प्रश्न पूछे थे, वही मेरे भी थे, इसलिए अधिकतर जबाव तो मिल ही गए"
4. अलीगढ़ ए.एम.यू. के छात्र मोहम्मद सलीम ने मान. प्रधानमंत्री से ये जाना कि अपने विषयों और कैरियर का चुनाव कैसे करें।
5. बी.एच.यू. की छात्रा शांभवी के इस प्रश्न पर कि अच्छा कैरियर कैसे चुनें तथा एम.ए. की प्रवेश परीक्षा देना चाह रही हूँ - इसकी तैयारी कैसे करूं ? मान. प्रधानमंत्री ने कहा कि असमंजस में रहने के स्थान पर ये तय करिए कि हमें आगे क्या करना है।

एक माँ का प्रश्न और उसका आनंददायी उत्तर -

1. सवाल जवाब के दौरान मधुमिता सेन गुप्ता नाम की महिला ने प्रधानमंत्री से कहा कि उनका बेटा हमेशा ऑनलाइन गेम्स खेलता रहता है, इसका पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा है, क्या करूं ? इस पर पीएम ने हल्के अंदाज में पूछा, क्या ये पबजी वाला है क्या ?
इसके उत्तर में मान. प्रधानमंत्री ने कहा ऑनलाइन गेम समस्या भी है और समाधान भी। तकनीकि को लेकर बच्चों से बात करें । अगर हम बच्चों को टेक्नोलॉजी से दूर करेंगे तो वो अपनी जिन्दगी में पीछे चले जाएंगे। 'कुछ खिलौनों के टूटने से बचपन नहीं मरा करते', कविता सुनाकर भी उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।

प्रस्तुति - राजेन्द्र सिंह बघेल, प्रशि. प्रमुख विद्या भारती।

शिशुवाटिका में शिशु का विकास करना ही हमारा उद्येश्य - रविकुमार

विद्या भारती हरियाणा द्वारा गीता विद्या मंदिर गोहाना में शिशुवाटिका कार्यशाला का आयोजन (26 से 29 दिसंबर 2018) किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री रवि कुमार जी (सह संगठन मंत्री हरियाणा) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं वंदना के साथ किया गया। श्री रविकुमार जी ने अपने उद्बोधन में शिशुवाटिका की संकल्पना एवं इसके प्रमुख आधार पर चर्चा की। अन्य विद्यालयों में नर्सरी, केजी. एवं विद्या भारती के विद्यालयों में चल रही शिशुवाटिका के बीच अंतर को समझाया। उन्होंने कहा कि शिशुवाटिका में आने वाले शिशुओं के साथ आत्मीय संबंध बनाकर उन्हें संस्कार दिए जाते हैं, उनके शारीरिक, मानसिक आवश्यकताओं को समझकर उनका विकास किया जाता है। शिशुओं को स्नेह, स्वतंत्रता एवं आनंद देना, उन्हें क्रियाशील बनाना ही शिशुवाटिका की संकल्पना और आधार है।

कार्यशाला में श्री रवि कुमार जी ने आचार्यों को बताया कि किस प्रकार से समय-समय पर आचार्य, अभिभावक प्रबोधन, मातृ गोष्ठी, अभिभावक गोष्ठी, दादा-दादी गोष्ठी सम्मेलन होने चाहिए। विशेष रूप से छोटे-छोटे समूहों में चर्चा-परिचर्चा होनी चाहिए, जिसमें बालक के स्वास्थ्य एवं अहार-विहार संबंधी जानकारी लेनी व देनी चाहिए। वर्ष में दो या तीन बार शिशुवाटिका मातृ-गोष्ठी होनी चाहिए। वर्ष में दो बार आचार्या को बच्चों के घर भी अवश्य जाना चाहिए। अभिभावक प्रबोधन शिक्षा के क्षेत्र में एक सुदृढ़ स्तम्भ है। कार्यशाला में शिशुवाटिका क्रियाकलाप का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। श्रीमती नम्रता दत्त जी ने शिशु मनोविज्ञान को पी. पी.टी. द्वारा बताया कि शिशु जन्म से लेकर पाँच वर्ष तक किस प्रकार विकास करता है, उनके मन एवं भावों को समझना चाहिए। श्रीमती सुनीला जी (क्षेत्रीय शिशुवाटिका प्रमुख) ने शिशुवाटिका की 12 शैक्षिक व्यवस्थाओं एवं उनमें होने वाले क्रियाकलापों का विस्तार से चर्चा किया। अगले सत्र में शिशु विकास का मूल्यांकन किस प्रकार हो, इस विषय पर श्रीमती सुनीता वर्मा जी (प्रांत संयोजिका शिशुवाटिका) ने अपने वक्तव्य में कहा कि शिशु का मूल्यांकन अभी जो हम करते हैं वह केवल 20 प्रतिशत ही है, उसे बढ़ाना चाहिए। कार्यशाला के समापन में श्री बालकिशन जी (संगठन मंत्री हरियाणा) ने भी शिशुवाटिका से संबंधित मुख्य बातें साझा की।

प्रचार हमारी सक्रियता समाज तक पहुँचाने का माध्यम है - डॉ. गोविन्द शर्मा

अखिल भारतीय प्रचार विभाग कार्यशाला

हमारी सक्रियता समाज तक पहुँचाने का माध्यम प्रचार है। आज हम विभिन्न प्रकार के गुणवत्ता पूर्ण कार्य कर रहे हैं जिसके परिणाम भी चमत्कारिक आ रहे हैं, लेकिन यह बात हम समाज तक नहीं पहुँचा पाते। यह 'जंगल में मोर नाचा, किसने देखा' की स्थिति है, जबकि विज्ञान के चमत्कारिक देन सोशल मीडिया हर तीसरे व्यक्ति के हाथ में है जिसका उपयोग स्वयं भी करता है। आज प्रचार समाज की सोच पर प्रभाव डालने का बड़ा माध्यम है। उक्त विचार विद्या भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा ने भोपाल में आयोजित दो दिवसीय विद्या भारती की प्रचार विभाग की अखिल भारतीय कार्यशाला (दिनांक 2 से 3 फरवरी 2019) के उद्घाटन सत्र में कही।

उक्त कार्यशाला में देशभर से प्रचार विभाग का काम देखने वाले 80 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। यह कार्यशाला 8 सत्रों में सम्पन्न हुई, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया का किस प्रकार उपयोग करना चाहिए, इसका तकनीकि कौशल क्या है, की जानकारी श्री अरूण कुमार (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने दी। उन्होंने बताया कि प्रचार तंत्र समाज में किस प्रकार कार्य कर रहा है और लोगों पर किस प्रकार मनोवैज्ञानिक प्रभाव बना रहा है, यह कम लोग जानते हैं। जबकि आज मीडिया की स्पीड काफी तेज हो गई है। सन् 2000 के बाद संचार क्रांति में परिवर्तन आया और सोशल मीडिया के आने से तो जन-जन को अपनी बात कहने और लोगों तक पहुँचाने का माध्यम बन गया है। 2020 तक 60 प्रतिशत से अधिक लोग सोशल मीडिया पर होंगे।

अखिल भारतीय प्रचार टोली सदस्य विद्या भारती श्री रविकुमार जी ने बताया कि हम शिक्षा क्षेत्र के काम करने वाले संगठन में काम कर रहे हैं शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियों का सामना हम सीधा करते हैं। इन चुनौतियों का प्रचार के माध्यम से हम किस प्रकार सामना कर सकते हैं। इसके लिए हमें अपनी अवधारणा को समाज के सामने स्पष्ट करने का माध्यम प्रचार-तंत्र है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया से संवाद विषय पर दीपक मित्र, माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय, लोकेन्द्र सिंह प्रो. पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रवि कुमार जी ने तकनीकि उपयोग के प्रकारों से कार्यशाला में अपनी बात रखी।

कार्यशाला का समापन करते हुए विद्या भारती के राष्ट्रीय मंत्री श्री अवनीश जी भटनागर ने कहा कि अपना विचार समाज तक पहुँचाना और सावधानी से पहुँचाना, यही इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है। क्योंकि सोशल मीडिया वरदान भी है, और अभिशाप भी। बिना विचार किए कोई बात डालना या फारवर्ड करना आपकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकती है। इसलिए संगठन तंत्र को ध्यान में रख इसका उपयोग करें।

यह कार्यशाला सरस्वती विद्या मंदिर, शारदा विहार, भोपाल में सम्पन्न हुई। इसमें राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जे.एम. काशीपति, सह संगठन मंत्री श्री श्रीराम अरावकर, श्री यतीन्द्र शर्मा राष्ट्रीय मंत्री अवनीश भटनागर, राष्ट्रीय संयोजक प्रचार विभाग श्री सुधाकर रेड्डी, सदस्य श्री रविकुमार जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री भालचन्द्र रावले, प्रांतीय संगठन मंत्री श्री हितानंद शर्मा उपस्थित रहे।

चंद्रहंस पाठक, प्रचार प्रमुख मध्य भारत

हमारा कार्य समाज में सर्वस्पर्शी व सर्वव्यापी बनें - गोविन्द कुमार

विद्या भारती चित्तौड़ प्रान्त की वार्षिक योजनानुसार 28 जनवरी 2019 को पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की जयन्ती पर विद्या भारती (बाराँ) के कार्यकर्त्ताओं का एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन आदर्श विद्या मन्दिर, नवीन भवन किशनगंज, बाराँ में आयोजित हुआ। जिसमें जिला कार्यकारिणी व जिले में संचालित विद्यालयों की उपसमितियों के 110 पदाधिकारी व सदस्यों ने भाग लिया। इस कार्यकर्त्ता सम्मेलन में विद्या भारती के राष्ट्रीय सहमंत्री मा. शिवप्रसाद, चित्तौड़ प्रान्त के संगठन मंत्री श्री गोविन्द कुमार, मंत्री श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा, सचिव श्री किशनगोपाल कुमावत, निरीक्षक श्री नवीनकुमार झा, जिला अध्यक्ष श्री गजानन्द नागर, मंत्री श्री प्रमोदकुमार राठौर का विभिन्न सत्रों में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्रान्त निरीक्षक श्री नवीन कुमार झा ने सम्मेलन की भूमिका रखते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का उद्देश्य हम सभी कार्यकर्त्ताओं का आपस में समन्वय के साथ कार्य हो सके, है। हम सब संगठन की रीति-नीति समझकर व अपने अनुभवों का आदान-प्रदान भी करते हैं। इस प्रकार के चिन्तन-मंथन के परिणामस्वरूप ही हम आदर्श विद्यालय की संकल्पना को साकार कर सकते हैं।

प्रान्त संगठन मंत्री श्री गोविन्द कुमार ने संगठन की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए कहा कि समाज में हमारा कार्य सर्वव्यापी व सर्वस्पर्शी बने। सचिव श्री किशन गोपाल ने प्रभावी शिशुवाटिका बनाने का आग्रह करते हुए क्षेत्र व प्रान्त द्वारा निर्धारित शिशुवाटिका प्रोत्साहन योजना से अवगत कराया।

इस अवसर पर श्री शिवप्रसाद जी ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव देश की नीति निर्धारण के लिए अहम है। हमें जागरूक नागरिक बनकर राष्ट्र का चिन्तन करना है। यह लोकसभा चुनाव चुनौतिपूर्ण है। हमें इसे अभियान के रूप में सफल करना है। राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ताओं के लिए चुनाव राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति है। समापन के उपरान्त अतिथियों ने मंत्रोच्चारण के साथ वृक्षारोपण किया।

गजानन्द नागर, विद्या भारती बाराँ

भारतीय विद्या केन्द्रम का खेल कूद समारोह सम्पन्न

आंध्रप्रदेश के भारतीय विद्या केन्द्रम में प्रांतीय समिति का खेलकूद समारोह (दिनांक 4-5 जनवरी 2019) विशाखापट्टणम में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम आचार्य एन. राजलक्ष्मी जी के अध्यक्षता में हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में आयकर विभाग के संयुक्त संचालक श्रीमती मिनी चंद्रन जी के साथ-साथ समारोह में भारतीय विद्या केन्द्रम के मंत्री श्री सुब्रमण्यम जी भी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने अपने संभाषण में कहा कि ''विद्यालय स्तर से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ चलाना अत्यंत ही आनंद की बात है, इससे भैया-बहनों के शारीरिक विकास के साथ-साथ उनमें संपूर्ण व्यक्तित्त्व विकास व मानसिक क्षमता भी बढ़ेगी।''

कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य श्रीमती राजलक्ष्मी ने अपने उद्बोधन में स्पष्ट रूप में कहा कि ''विद्या भारती में शिक्षा के साथ-साथ छात्रों में संपूर्ण व्यक्तित्त्व विकास के लिए शारीरिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता है। उसी के अंतर्गत हर साल इस प्रकार के खेलकूद समारोह का आयोजन किया जाता है।''

कार्यक्रम के प्रारम्भ में विद्यार्थियों का संचलन, शारीरिक कार्यक्रम उपस्थित सभी के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला। खेलकूद कार्यक्रम के विजेताओं में 34 विद्यालयों से 400 विद्यार्थी भाग लिए। यहाँ के विजेता भैया-बहन प्रांत स्तर पर होने वाले खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेंगे। कार्यक्रम में वालीबॉल, थ्रोबॉल, कबड्डी, खो-खो, शतरंज, कैरम्स, 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 800 मीटर एवं 1500 मीटर की दौड़ आदि की प्रतियोगिताएँ हुई।

पूर्वोत्तर के पदाधिकारियों का हुआ बिहार में जिला केन्द्र पर प्रवास

'समाज में दो प्रकार के विद्यालय संचालित हो रहें हैं- एक वह है जो स्थापना के समय से ही बहुत अधिक धन खर्च कर स्थापित किया जाता है और बाद में बहुत अधिक शुल्क लेकर नामांकन लिया जाता है। इसमें समाज के सम्पन्न वर्ग के बच्चे ही नामांकन करा पाते हैं। दूसरी ओर विद्या भारती के अन्तर्गत चलने वाले सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर जो समाज के सहयोग से ही स्थापित है, में समाज के हर वर्ग के बच्चे शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण करते हैं।' उक्त बातें पूर्वोत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री ब्रह्मा जी राव ने वरिष्ठ माध्यमिक सरस्वती विद्या मंदिर, मुंगेर के प्रांगण में अपने बिहार प्रवास के दौरान आचार्यो को संबोधित करते हुए कहा। उनका यह प्रवास बिहार के विभिन्न जिलों में जिला केन्द्र के विद्यालय को शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी एवं सामाजिक समरसता का केन्द्र बनाने के उद्देश्य से हो रहा है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये शोध एवं प्रयोग करने होंगे, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन हो सके। शिक्षा के साथ-साथ सेवा कार्य भी करने होंगे। सामाजिक समरसता की दृष्टि से जिला स्तर पर बड़ा कार्यक्रम का आयोजन करें, जिसमें समाज के सभी वर्गों की सहभागिता हो। संस्कृत भाषा के विकास के लिए भी उन्होंने जोर दिया। विद्या भारती द्वारा किए जाने वाले शिक्षण कार्यो को विभिन्न मीडिया के माध्यम से समाज तक पहुँचाने की आवश्यकता पर उन्होंने जोर दिया।

इस अवसर पर विद्या भारती बिहार क्षेत्र के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री दिवाकर घोष, पूर्णकालिक कार्यकर्ता रमेशचन्द्र द्विवेदी, प्रधानाचार्य नीरज कुमार कौशिक, बालिका खण्ड की प्रधानाचार्या कीर्ति रश्मि, उप प्रधानाचार्या उज्ज्वल किशोर सिन्हा एवं समस्त आचार्य/आचार्या उपस्थित रहे।

संस्कृति शिक्षा संस्थान में हुआ रागगीरी के सालाना कैलेंडर का विमोचन

भारतीय शास्त्रीय संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्ययंत्रों को लेकर रागगीरी के सालाना कैलेंडर का विमोचन विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान कुरुक्षेत्र ने (29 दिसंबर 2018) अपने प्रांगण में किया। इस खास कैलेंडर में सितार, तबला, बाँसुरी, वॉयलिन, सारंगी, हारमोनियम, संतूर जैसे वाद्ययंत्रों के बारे में गहन जानकारी दी गई है। इसके अलावा इन वाद्ययंत्रों से जुड़े महान कलाकारों की तस्वीरों को शामिल किया गया है। उत्तर एवं दक्षिण भारतीय संगीत में प्रयोग किए जाने वाले वाद्ययंत्रों घटम, मृदंगम को भी इस कैलेंडर में शामिल किया गया है। कैलेंडर का विमोचन विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के निदेशक डॉ. रामेंद्र सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी की निदेशक डॉ. कुमुद बंसल और रागगीरी के संचालक श्री शिवेंद्र कुमार सिंह ने किया। इस मौके पर डॉ. रामेंद्र सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति में संगीत का बड़ा महत्त्व रहा है। आज की युवा पीढ़ी को अपने महान कलाकारों को जानने का ये अनूठा प्रयास है। उन्होंने कहा कि हमारे देश ने एक से बढ़कर एक दिग्गज कलाकारों को जन्म दिया है, जिन्होंने पूरी दुनियाँ में अपनी अलग पहचान बनाई है। ये कैलेंडर उन महान विभूतियों के लिए श्रद्धांजलि है।

इस मौके पर हरियाणा साहित्य अकादमी की निदेशक डॉ. कुमुद बंसल ने कहा कि कई बार ऐसा होता है जब किसी एक विधा के कलाकार का कद इतना बड़ा हो जाता है कि उस विधा के बाकी कलाकारों को लोग कम ही जान पाते हैं। इसके लिए रागगीरी ने लगभग सभी शीर्ष कलाकारों को कैलेंडर में शामिल कर समग्रता का अहसास कराया है। रागगीरी के संचालक संस्थापक शिवेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि लगातर चार साल से इस प्रकार के कैलेंडर प्रकाशित हो रहा है। इस कैलेंडर का उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अपने देश के महान कलाकारों को जान सकें।

डॉ. रामेन्द्र सिंह

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत पूर्वछात्र-छात्रा सम्मेलन

विद्याभारती ब्रज प्रदेश की तीनों मण्डलों में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत पूर्व-छात्रों के तीन सम्मेलन दिसम्बर माह के तीन रविवार क्रमश: 16 को अलीगढ़ मण्डल का सिकन्दराराऊ, हाथरस में, 23 को बरेली मण्डल का नैनीताल मार्ग, बरेली में तथा 30 को आगरा मण्डल का कमलानगर, आगरा में सम्पन्न हुआ। इन तीनों सम्मेलनों में प्रमुख रूप से मा. यतीन्द्रकुमार जी (अ. भा. सह संगठन मंत्री विद्या भारती), मा. प्रकाशचन्द्र जी (राष्ट्रीय मंत्री विद्या भारती), श्री कन्हैयालाल जी (संगठन मंत्री संकल्प संस्थान), श्री ओमपाल सिंह जी, (राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री-'राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ'), श्री हेमचन्द्र जी (राष्ट्रीय मंत्री विद्याभारती एवं राष्ट्रीय संयोजक विद्या भारती पूर्वछात्र परिषद्) तथा श्री हरीशंकर जी (संगठन मंत्री, ब्रज प्रदेश) रहे।

माँ सरस्वती की वन्दना के उपरान्त अलीगढ़ मण्डल के सम्मेलन की प्रस्ताविकी श्री विनोदकुमार शर्मा संयोजक विद्याभारती ब्रजप्रदेश ने, बरेली मण्डल के सम्मेलन की श्री आशुतोष जी, मंत्री पूर्व-छात्र परिषद् बरेली ने एवं आगरा के सम्मेलन में श्री संजय गोस्वामी, प्रदेश प्रमुख विद्या भारती ब्रज प्रदेश ने रखी। प्रस्ताविकी में कहा कि विद्याभारती के पूर्व-छात्र-छात्राएँ उसकी अमूल्य सम्पत्ति हैं। पूर्वछात्र परिषद् इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से अपने पूर्व-छात्रों को जोड़कर राष्ट्र एवं समाज जीवन की एक दिशा देने का प्रयास करती है। स्व. भाऊराव देवरस जी के प्रयास से विद्याभारती रूपी गंगा लाखों को लाभान्वित कर रही है। जिस विद्यालय ने हमें शिक्षा और संस्कार दिए, अब हम बड़े होकर समाजहित के विभिन्न कार्यों में पूर्वछात्र परिषद् के सहयोग से कार्य खड़ा करेंगे। समाज ने हमारे लिए किया, अब हमें भी समाज के लिए कुछ करना है।

अलीगढ़ और आगरा मण्डल के सम्मेलन में श्री कन्हैयालाल जी ने कहा कि जिस आयु वर्ग के आप लोग हैं अर्थात 18-25 वर्ष की आयु निर्माण की आयु है, यह ऊर्जावान आयु है। इसमें आप जो चाहे बन सकते हैं। आप चाहें तो नर से नारायण भी बन सकते हैं। इस आयु में सपने भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। हमें सपने सदैव बड़े देखने चाहिए। कोई भी सपना पूरा करना कठिन नहीं है बस लगने-जुटने की आवश्यकता है। युवाओं ने जब समाज में काम करने की ठान ली तो अपने को लगा दिया समाज के कार्य में। अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं युवाओं ने। जो मन कहता है वह कीजिए, मत सोचिए कि लोग क्या कहेंगे? लोग तो कुछ न करने पर भी कहेंगे ही। अपने जीवन में कभी किसी प्रकार का पछतावा नहीं रहना चाहिए। सोचे हुए कार्यों को समय रहते पूरा करने का प्रयत्न करना।

अलीगढ़ के सम्मेलन में मा. यतीन्द्र कुमार जी ने कहा कि हम सब स्वभाषा एवं स्वदेशी का विचार लेकर समाज व राष्ट्र के कार्य में जुटेंगे। मेरे अन्दर में शिशु मन्दिर, विद्या मन्दिर का पूर्वछात्र हूँ, इस बात का गर्व बना रहना चाहिए। हम समाज का चित्त, चित्र और चरित्र बदलेंगे। हम भय, भूख, भ्रष्टाचार और व्यभिचार से मुक्त भारत खड़ा करेंगे। सम्पूर्ण समस्याओं से मुक्त भारत खड़ा करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ें।

बरेली में श्री ओमपाल सिंह जी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए चेताया कि 1945 के द्वितीय विश्व युद्ध में बर्वाद हुआ जापान आज दुनिया के विकसित देशों में आता है और 1947 में आजाद हुआ भारत आज भी बहुत पीछे है। इसका कारण है जापान के लोगों की अपने देश के प्रति निष्ठा और देशहित में 24 घण्टे कार्य करने का समर्पण। हमारे यहाँ की शिक्षा मास्टर, डॉक्टर, इंजीनियर बनाती है लेकिन मनुष्य बनाने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

यहाँ सम्मेलन के समापन पर मा. प्रकाशचन्द्र जी ने पूर्व-छात्रों के देश-व्यापी स्वरूप को उनके समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि पूर्वछात्र अपने भविष्य को बनाते हुए सामाजिक कार्यों में भी योगदान करें। दूसरों के लिए दीपक जलाने पर स्वयं को भी प्रकाश मिलता है। जीवन सदैव प्रसन्नतापूर्वक जिएँ, सभी कार्यों को करते हुए अपने संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों को न भूलें।

आगरा में मुख्य अतिथि के रूप में 'इसरो' के वैज्ञानिक और मेरठ शिशु मन्दिर के पूर्वछात्र डॉ. चन्द्रमोहन नौटियाल रहे। उनकी उपस्थिति पूर्वछात्रों के लिए गौरव का विषय रहा। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में विज्ञान की उपलब्धियों के बारे में भारत की ऊँचाईयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह विज्ञान की शक्ति है कि जो हमें नहीं मालूम, वह भी हमें बताता है। हमारा सोच वैज्ञानिक होना चाहिए। बेसिक वैल्यूज को जीवन में उतारें। भाषा ज्ञान का स्रोत है, अत: हमें किसी भाषा से परहेज नहीं करना चाहिए।

समापन के अवसर पर मा. हेमचन्द्र जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जीवन संस्कारों से ही बनता है। डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम सामान्य परिवार में पैदा हुए किन्तु उच्च कोटि के वैज्ञानिक बने। पूर्वछात्रों से उन्होंने कहा कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाजहित के कार्यों में अपना योगदान देना। स्वयं की पहचान बनाए रखने का प्रयास करना। लोग मेरे परिवार को मेरे नाम से जानते हैं अथवा नहीं, विचार करना।

सीखने-सीखाने की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए - विजय नड्डा

मानक परिषद् कार्यशाला, जालंधर

शिक्षा का लक्ष्य ही बालकों का सर्वांगीण विकास करना है। ऐसे बालकों का निर्माण करना जो राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हों। जो देश की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए देश की सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचा सकने में सक्षम हों। इस प्रकार के बालकों का निर्माण तभी सम्भव हो पाएगा, जब अध्यापकों के अन्दर ये भावनाएँ कूट-कूट कर भरी हों। इन भावनाओं के साथ-साथ आधुनिकतम शिक्षण व प्रशिक्षण भी आवश्यक है क्योंकि मात्र भावनाओं से ही सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती हैं। शिक्षण प्रशिक्षण के बाद आवश्यक है कि हम सभी जो कुछ भी कर रहे हैं उसका योग्य मूल्यांकन हो। इस सात दिवसीय कार्यशाला का उद्येश्य मूल्यांकनकर्ता तैयार करना है। वास्तव में तो सीखने सीखाने की प्रक्रिया तो चलती रहनी चाहिए। हम सभी जीवन में कदम-कदम पर सीखते रहते हैं। यहाँ आने से पूर्व हमें लगता था कि शिक्षा क्षेत्र के संबंध में हम बहुत कुछ जान चुके हैं परन्तु यहाँ आकर पता लगा कि जानने के लिए बहुत कुछ शेष है। हमारा उद्येश्य मात्र केवल स्कूल चलाना ही नहीं है अपितु हमें शिक्षा जगत का नेतृत्व करना है। उन्होंने भावपूर्ण शब्दों में कहा ''लोगों ने हमारी बुलंदियों को तो देखा, परन्तु हमारे पाँव के छाले को नहीं। जो भी आज बुलंदियों पर दिखाई देते हैं, वे सभी एक कठिन प्रक्रिया से ही गुजरे हैं। इस कार्यशाला के उपरान्त हमारे दृष्टिकोण में निश्चित रूप से परिवर्तन होगा, ऐसी मैं अपेक्षा करता हूँ। ये भावपूर्ण उदगार विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के सह संगठन मंत्री श्री विजय नड्डा जी ने मानक परिषद् के सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन पर व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि इस कार्यशाला में जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा व दिल्ली से 52 प्रशिक्षार्थियों ने 7 प्रशिक्षकों से विद्यालय मूल्यांकन की बारीकियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा 17 स्कूलों के मूल्यांकन के दौरान 8000 छात्रों को दिशा प्रदान की गई।

कुम्भ शिविर में मा. रज्जू भैया के जन्मदिवस पर हुआ स्मरणांजलि

विद्या भारती पूर्वी उ.प्र. क्षेत्र द्वारा माघ मेला प्रयागराज में आयोजित कुम्भ-दर्शन शिविर में पूर्व सर संघचालक प्रो. राजेन्द्र प्रसाद (रज्जू भैया) के जन्मदिवस (29 जनवरी) पर ''स्मरणांजलि'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मा. ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी), विशिष्ट अतिथि मा. डोमेश्वर साहू जी, डॉ. नरेन्द्र सिंह गौड़ (पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री, उ.प्र. सरकार), डॉ. के.पी. श्रीवास्तव, डॉ. सविता अग्रवाल एवं अध्यक्ष के रूप में स्वामी श्याम नारायण जी महाराज उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की प्रस्ताविकी भारतीय शिक्षा समिति पूर्वी उ.प्र. के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा. डोमेश्वर साहू जी ने दी। उन्होंने कहा कि रज्जू भैया बाल्यकाल से ही पूर्ण सजग एवं असामान्य बालक थे। उन्होंने 1942 में एम.एस.सी. प्रथम वर्ष पास करने के बाद रा.स्व.संघ की ओर आकर्षित होकर संघ के एक अच्छे कार्यकर्ता बने। वहीं प्रयाग नगर में संघ के नगर कार्यवाह का दायित्त्व संभाला। एम.एस.सी. पास करते ही वे प्रयाग विश्वविद्यालय में व्याख्याता के पद को संभाला। इसके साथ ही वे संघ के विभिन्न दायित्त्वों (सम्भाग कार्यवाह, प्रान्त कार्यवाह, क्षेत्र प्रचारक, तथा सह सरकार्यवाह, सरकार्यवाह, सर संघचालक) को पूर्ण निष्ठा एवं त्याग के साथ निभाते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया। इस कार्य में उन्हें कई बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। समाज के आलोचना को भी सहन करते हुए वे अहर्निश अपने समाजिक कार्य को निरंतर आगे बढ़ाते रहे। उनके जीवन का अंतिम समय रोगग्रस्त होकर शिथिल हो गया था, लेकिन वह इन समस्त दायित्त्वों का निर्वहन तब तक करते रहे जब तक उनका अंग-प्रत्यंग कार्य करता रहा। अंतिम दिनों में उन्होंने (मार्च 2000 में) मा. सुदर्शन जी को सम्पूर्ण दायित्त्व को सौंप कर स्वैच्छिक पद सन्यास लेकर संघ के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बेहद सरल जीवन जीते हुए उन्होंने देश की तन मन धन से सेवा की। उन्होंने कहा कि प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रख्यात प्रोफेसर होते हुए भी उनका व्यवहार अति साधारण कार्यकर्ताओं के साथ भी अति सहज एवं सौम्य था। काशी प्रान्त के संगठन मंत्री डा. राम मनोहर जी ने कहा कि मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे परम पूज्य रज्जू भैया के सान्निध्य में रहकर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ तथा उनके द्वारा बताई गई एक-एक बातें आज मेरे मार्गदर्शन का कार्य कर रही है।

प्रदेश निरीक्षक श्री बाँकेबिहारी पाण्डेय ने कहा कि पूज्य रज्जू भैया का सपना था कि विद्या भारती शिक्षा संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर बढता रहे। जिससे कि छात्रों को संस्कारयुक्त एवं राष्ट्रभक्ति की शिक्षा प्राप्त हो सके। अपने अध्यक्षीय आशीर्वचन में स्वामी श्यामनारायण जी ने पूज्य रज्जू भैया को एक युग पुरुष बताया जो हम लोगों के लिए आजीवन मार्गदर्शक का कार्य करते रहेंगे।

विद्या भारती के वरीष्ठ कार्यकर्ता श्री विजय उपाध्याय (क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख), चिन्तामणि सिंह (सहमंत्री, भा.शि.स. काशी प्रदेश) आदि ने पूज्य रज्जू भैया के जीवनी पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम में ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इं.कॉ. सिविल लाइन्स के विभिन्न छात्रों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रात: काल से रामचरित मानस का पाठ कराया गया।

बाँकेबिहारी पाण्डेय
(प्रदेश निरीक्षक, भा. शि. स. पूर्वी उ प्र., काशी, प्रान्त)

विद्या भारती की अमूल्य निधि हैं हमारे पुरातन छात्र - डॉ. पवन तिवारी

अपनी अमूल्य धरोहर (पुरातन छात्र) को सहेजने के लिए सरस्वती शिक्षा परिषद्, जबलपुर में पूर्व-छात्र परिषद् द्वारा विद्या भारती महाकौशल प्रांत के पूर्व-छात्र परिषद् व प्रभारी आचार्यों की बैठक (20 जनवरी 2019) को सम्पन्न हुई। इन पूर्व-छात्र एवं प्रभारी आचार्यों की बैठक में श्री पवन तिवारी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान अपनी स्थापना के बाद से एक गति प्रदान करने वाला संस्थान रहा है। देश भर में यह संस्थान धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के साथ-साथ मानव क्षमता के मानसिक और भावनात्मक पहलुओं की गुणवत्ता, शिक्षा और उसके पुनरूत्थान हेतु संकल्पित हैं। हम सभी अनुभवी, प्रेमपूर्ण और इमानदार शिक्षकों, समस्त समर्पित छात्रों का एक समूह हैं। हमारे आचार्य, अभिभावक और पुरातन छात्र सब मिलकर सामाजिक सहयोग से विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक कल्याण हेतु सेवा कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि हमारा ध्यान हमेशा बच्चों के समग्र विकास पर रहा है। प्रत्येक बच्चे के लिए अपने निर्धारित पाठ्यक्रम के साथ-साथ सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान हमारे शिक्षाविदों की पहली प्राथमिकता होती है। हम बच्चों को अपने कौशल निखारने हेतु तकनीकी और गैर तकनीकी दोनों गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। विभिन्न विद्यालय की छात्र परिषद् संकाय के साथ छात्रों की सीधी बातचीत को सक्षम बनाता है। हमारे शिक्षाविदों द्वारा पूर्व-छात्रों के माध्यम से बच्चों को जनजाति क्षेत्रों के दर्शन एवं पर्यावरण के करीब लाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। इसमें विद्या भारती महाकौशल प्रांत के 20 जिलों के विद्यालयों से 121 प्रभारी आचार्य उपस्थित रहे।

प्रवीण तिवारी,
मीडिया प्रभारी महाकौशल।

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग वर्ष 2018 के अंतिम परीक्षा में चयनित हुए 'समुत्कर्ष' के छात्र

सफलता किसी की मोहताज नहीं होती। मेहनत से आगे बढ़ने वालों को कोई भी बाधा रोक नहीं सकती। ऐसे कई उदाहरण दुनियाँ में मौजूद है, जहाँ एक व्यक्ति की सकारात्मक सोच एवं दृढ़ इच्छाशक्ति ने दुनियाँ को झुका दिया। अगर हौसले बुलन्द हों, और दिल में मंजिल पाने की चाहत हो तो कोई भी परिस्थिति इंसान को रोक नहीं सकती। आज मुझे बहुत खुशी है कि समुत्कर्ष के छात्रों ने एक बार पुन: मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा में अपना परचम लहरा कर हम सभी को गौरवान्वित किया है। समुत्कर्ष अर्थात् सम्यक उत्कर्ष अर्थात् सर्व समाज सम भाव के संकल्प को लेकर आप सभी आगे बढ़ें। यही मेरी शुभकामना है। उक्त विचार ''समुत्कर्ष'' द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह (12 फरवरी 2019) में उपस्थित चयनित एवं अध्ययनरत छात्रों को संबोधित करते हुए प्रांत प्रचारक मा. श्री रंगराजे जी ने व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता सरस्वती शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार आचार्य ने की।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 की मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा में समुत्कर्ष के 14 छात्रों ने विभिन्न प्रशासनिक पदों पर चयनित होकर हम सभी का नाम रोशन किया है। ज्ञातव्य हो कि समुत्कर्ष विद्या भारती महाकौशल प्रांत द्वारा मार्गदर्शित प्रकल्प है जो विगत दो वर्षो से विभिन्न प्रशासनिक परीक्षाओं की नि:शुल्क तैयारी कराता है। इन दो वर्षों में 62 छात्रों ने एम.पी.एस.सी. की परीक्षा में सफल हुए हैं। इस प्रकल्प में शहर के वरीष्ठ अधिकारीगण एवं शिक्षाविदों द्वारा समय-समय पर छात्रों को मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इस अवसर पर समुत्कर्ष के संरक्षक एवं मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विपिन बिहारी व्योहार, डॉ. सुरेश्वर शर्मा, डॉ. पवन तिवारी, डॉ. ए.डी.एन. वाजपेयी, डॉ. कपिलदेव मिश्र, डॉ. नरेन्द्र कोष्टी, डॉ. ए.वी. श्रीवास्तव, डॉ. अतुल दूबे, डॉ. आशीष मिश्र एवं संगठन के वरीष्ठ पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रवीण तिवारी, मीडिया प्रभारी महाकौशल।

विद्याभारती संकुल संवाद
Date of publishing : 20 February, 2019
Total No. of Pages : 8

RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21
Date of Posting -24-25 February, 2019

अखिल भारतीय कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की अखिल भारतीय कार्यकारिणी की तीन दिवसीय बैठक कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। इस बैठक की प्रस्तावना में अ.भा. संगठन मंत्री मा. जे.एम. काशीपति जी ने गत वर्ष की कार्यवाही का ध्यान कराते हुए आगामी वर्षों की योजना निर्मिति एवं संगठनात्मक रचना के विस्तार और सुदृढ़ता के लिए नए कार्यकर्ताओं के विकास पर बल दिया। शैक्षिक समूह की दृष्टि से विद्वत परिषद्, शोध एवं प्रशिक्षण विषयों हेतु तीन वर्ष की योजना बनाने हेतु आग्रह किया। श्री काशीपति जी ने संगठनात्मक दृष्टि से दो श्रेणी के कार्यकर्ता एक- विद्यालय केन्द्रित, दूसरा- समाजोन्मुखी कार्यकर्ता के निर्माण पर बल दिया। कौशल विकास के लिए दक्ष भारती के नाम से कार्य शुरु हुआ है। मास में एक दिन स्किल डे कक्षा 6 से ऊपर के बच्चों के बीच मनाने का संकल्प लिया गया। उपक्रमशीलता को छात्र की पढ़ाई से जोड़ने का निर्णय (अभिभावक इसका महत्व समझेंगे) लिया गया। Value Education पर कार्य कर रहे एक कार्यकर्ता द्वारा Power Presentation प्रस्तुत किया गया।

बैठक में विद्या भारती के विभिन्न आयामों शिशु वाटिका, जनजाति क्षेत्र की शिक्षा, ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा, बालिका शिक्षा आदि के गुणात्मक विकास पर विस्तार से चर्चा हुई। इसी प्रकार संस्कृति बोध परियोजना के अंतर्गत 11 भारतीय भाषाओं के कई लाख छात्र संस्कृति ज्ञान परीक्षा देते हैं। इसमें छात्रों एवं आचार्यों की सहभागिता बढ़ाने हेतु विचार करने की आवश्यकता है। अपने कार्य की दृष्टि से जो प्रांत के जिले कार्ययुक्त नहीं हैं, उन्हें कार्ययुक्त करने के लिए प्रयास जारी रहे, ऐसा आग्रह किया गया। विद्वत् परिषद्, शोध, शैक्षिक उन्नयन हेतु नवीन प्रयोग विद्या भारती की विशेषता बन चुके हैं, इनके लिए कार्य योजना विस्तार सभी क्षेत्रों में होने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

श्री दिलीप जी बेतकेकर ने कहा कि प्रबंधन का मन बनाना आवश्यक है। प्रबंधन में नियमित अवलोकन के पश्चात् Report Sharing के बाद क्रियान्वयन का पक्ष मजबूत होना आवश्यक है, अन्यथा Assesment का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। कार्यकर्ताओं का इस दृष्टि से मानस बनाना आवश्यक है। जिला केन्द्र प्रवास के माध्यम से सभी जिलों में शैक्षिक वातावरण सुदृढ़ हो, एक लाख गाँवों से विद्यार्थी हमारे विद्यालयों में आते हैं, यह संख्या और बढ़े, की दृष्टि से आगामी वर्षों में काम को गति देने की योजना बनी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मान. दत्तात्रेय जी का सान्निध्य और मागदर्शन मिला। उन्होंने कहा कि हम सभी माँ सरस्वती के पवित्र शिक्षा क्षेत्र में कार्य करते हैं तथा हम सभी देश, समाज व राष्ट्र के विषयों से भी जुड़े हुए हैं। हमें प्रयोगात्मक तरीके से नहीं बल्कि क्षेत्र में समय लगाकर कार्य करने की आवश्यकता है। देश की परिस्थिति ऐसी है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों बाद देश की बागडोर भारत के विषय में सोचने समझने वाले लोगों के हाथ में आया है। विचारधारा के नाते जिन शक्तियों का हम विरोध करते हैं, उसका अंत अभी नहीं हुआ है। विश्व के पटल पर भारत की प्रतिष्ठा अवश्य बढ़ी है, इससे कई विदेशी तत्त्वों को यह हजम नहीं हो रहा है। भारत को नीचा दिखाने का प्रयास वे करते रहते हैं। इसके लिए हमारी दूर-दृष्टि और सोच प्रबल होनी चाहिए। भारत के इतिहास को कुदृष्टि से देखना, दो समूहों के बीच संघर्ष करवाना, केरल में एक पार्टी के लोगों के द्वारा गौ को काटना, विश्वविद्यालयों में Beaf-Feast करना ये सभी कार्य हमारी संस्कृति के विरूद्ध प्रहार है।

मा. (डॉ.) गोविन्द प्रसाद जी के अध्यक्षीय वक्तव्य में विद्या भारती के उत्तम परीक्षा परिणाम, शिक्षणेत्तर गतिविधि, शिक्षा नीति की निर्मिति में विद्या भारती के योगदान की चर्चा की। हमारा लक्ष्य बालक को वैयक्तिक व्यक्ति नहीं, राष्ट्रभक्त बनाने का हो, धर्मनिष्ठ, समाजनिष्ठ, देशभक्त बने तभी विद्या भारती आधुनिक आन्दोलन बनेगा। वंदेमातरम् के साथ बैठक का समापन हुआ। यह बैठक दिनांक 06 से 08 फरवरी 2019 को कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। देश भर से 49 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

सेवा में

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री ललित बिहारी गोस्वामी, महामंत्री, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065, के लिए हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रेस, ए-26, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित। **संपादक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, फोन : 011-29840013